ISSN: 2583-8849
साहित्य रत्न ई-पत्रिका अगस्त2023 वर्ष1 अंक4

ब्याह न मेरा सोचना

वैभवी

जन्म तिथि- 07/09/1982

संपर्क सूत्र - 8447210768

ई मेल - rajvibha07@gmail.com

कवयित्री सह मंच संचालिका

संस्थापिका - हिंदी साहित्य संस्थान, दिल्ली मंच

अर्थशास्त्र से स्नातक

दो वर्ष इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में समाचार वाचिक के रूप में कार्य सम्पादन।

एक तुम्हारे साथ ने,बदल दिया संसार।
ऐसा लगता हर घड़ी,उड गगन के पार।।

मैं ही चूड़ी की खनक, मैं ही बेंदी हार।
मैं ही कुमकुम, आलता,पायल की झनकार!!

कान्ह कहीं सोए हुए, सुनें न चीख़ -पुकार।
बनना होगा "वैभवी", तुझको ही तलवार।।

कान्हां तुम्हारे सामने, लुटे-पिटे नित लाज।
फिर भी बैठे मौन तुम, कहां चक्र वह आज??

ब्याह न मेरा सोचना, लाख कहे संसार।
बाबुल! मैं तेरी परी, छोड़ न जाऊँ पार।।

रात जलाती चांदनी, चांद डसे ज्यों नाग।
विरहन की मन- आग भी, जाने कैसी आग??

पढ़ने को तो "वैभवी" , गीता पढ़ी, क़ुरआन ।
पर कितना छोड़ा अहम, लिया प्रेम को जान??

बिटिया ही धरती-गगन,बिटिया ही संसार।
बिन बिटिया सच जानिए ,जग ज्यों बिन आधार!!

गिट्टे,पिट्ठू , चूडियां ,बचपन के वे खेल।
कौन कराए अब भला, मेरा उनसे मेल??

नारी को समझा कहां, पूरा यह संसार।
नारी यदि है फूल तो, नारी है अंगार !!